

③

धर्मरत्न ब्रह्मचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-134

ॐ नमो जलपुत्राय ॥ ॐ नमः सर्ववृक्षवाधिसत्त्वानी. अमला मल
 राजका ॥ अनीताः ससूताः सर्वजिनाः असीमनिष्ठा. वज्रदा. समदेनु
 अरूपा. वज्रमयी. समसर्वदा. अनीत. नमो वज्रपदाः अजय. अ
 समसमका. र्नीतधर्मी ॥ खद्य ३ महावीरा. वसु. सम २ अरूपा
 हावली ॥ कद्य २ महावजाग्निके ॥ हह २ वज्रवजा कद्य ॥ धज २

॥ १ ॥

हं हं मधुली समवजाग्र. विक्रम ॥ कू २ गु २ सर्वथासर्वहि. काल
 २ अग्र. अग्निहिकं दू. स्वाहा ॥ ॥ नमो मंगलसहस्रजापिन. सर्वमंगु
 लकजापकगारवति ॥ सर्वजका. दिमिग्रा. अस्यासिद्धा. सर्वति ॥ ॥
 ॐ निष्ठीमूलविद्यानाध्यायी समाफ ॥ ॥ तथ सर्वकर्मावजगकु
 यार्थ. सर्वमथागमकदय. अनाकुन मकसहर्षी नयन ॥ ॥ तथ

४१ गाऊं

दी॥ नमस्तु यधिकार्ताः तथा गगानीः सर्वत्रा प्रति हुना वा पि धर्मना व
लिनीः अः असमसमः समतता उनीनता वा कि ४५ सतिः हज २ स्मज २
स्मज ४ विगतजागः वृद्ध धर्मनः सज २ समवलाः हस २ वय २ गगहाम
हावलनी तहाः कोल २ नः साग ज स्वाहा ॥ य ४ व द प्राग जू स्थ यः ज प
जा व स ह मु ४ ॥ आनीन यो दि के पा पीः की य न २ स्म न सी ४ यः

॥ २ ॥

ॐ तिष्ठा षा गाऊं ज नाम धा ज ही समा फ ॥ ॥ ॐ नमः समीक वृद्धा
नीः ॐ स हा भूर्गु गि जा ह्री व च क्र व कि सर्व यी मं तु वं धः ॐ न्द्रु
वन वं धः वृ ऊ द र्व वं धः धा ज य ॐ ह वा सि ना य न क न चि त् ॥ २
या दि केः कि द २ रि द २ चि वि २ गि वि २ सि वि २ रू रू २ स्वा हा
आ र्ग ३ ह्री व च क्र व कि नाम धा ज ही प वि समा फ ॥ ॥

सधर्म

ॐ नमः॥ सहर्म बृहतीकाय॥ ॥ ॐ वज्रधरः आः ३ ॐ जलरूप जलरसप्र
जलरसर्व बृह प्रवापितिः प्रह्ला पात्र मिता नाद स्वहावे वज्र सत्त्व रुद्र
यही नाष हाक जाय रुद्र स्वाहा॥ सहर्म पात्र मयन घी अवादन स
पन्नर्म रुद्र दद्यात्॥ पूर्ण धर्म दीर्घ गंधी यथा विधि नो सर्व दद्यात्
ॐ आरुं रुद्र स्वाहा॥ ॥ वृं तिथी सहर्म पात्र धा जही समाया॥

॥ ३ ॥

ॐ नमः सा नाये॥ ॐ नाच सर्व विद्यु हवः सर्वत यत्तं नि कचः प्रति
ता सः समकर्मः सर्व इक्षानः सिराय रज मू य रसा रुद्र रुद्र
सर्व इक्षु प्रह्ला सिर नि स्वाहा॥ ॥ वृं तिथी वज्र नाया धा जही
समाया॥ ॥ ॐ नमो धा जक यमाजीया॥ तद्यथा॥ ॐ जक मक वा
मः जक जदायः जक मूखायः जक जपि नायः जक रुजायः जक

नक

हानावसिमालाय नक नथ समा पूछाय नकाह नधसूषिताय
मम सर्व विद्वान् हन र चतुर्मा ज्ञानि वाजय रणाणय रजामय र
किंद र किंद र नाठा र नाप र लम व र कुंद र हंद र कुट र इंद
रुट र स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं द्राय ॥ की यमा ॥ व्रीः वजू हस य ॥ ॐ वृ व
जाय ॥ ॐ ह्रीं वृजाय ॥ ॐ अग्रय ॥ ॐ अर्धे ॥ नी वायू ॥ ॐ वी डा

॥ ४ ॥

य ॥ ॐ असूर्यय ॥ ॐ वृक्ष हा ॥ ॐ वसू ॥ ॐ वसु नि ॥ ॐ सर्व ना
रायः स्वाहा ॥ सर्व हरि स्थानमः स्वाहा ॥ हं हं हीं कीं हं रुं रुं र स्वाहा
ॐ तिथी नक मा विमाजी नाम धा नधी समा फा ॥ ॥ ॐ नमो ह
ग वरं सर्व कृतावा नमो जी जाजाय नथा ग नायां हं संम्य क्रीं वृक्ष
य ॥ मद्य धं ॥ ॐ इमं रमहा कृनः सर्व कृतावा नमो जी स्वाहा ॥ ॥

हंस्क

ॐ दीवा जमी. राजाना नतनी. पठितवी. सिद्धि हवति ॥ ॥ ॐ निमी
इगागनी धा जमी समाफा ॥ ॥ ॐ नमः श्री हज्ज काया ॥ को ध
पिंगल लाचनाय ॥ सहस्रगजस. धय २ काल २ प्रकाल २ प्रिगल
वय हल ॥ धय २ प्रसज २ हस २ गृह २ गृहका पय २ गाय २
मानय २ सर्व इह सत्तानीः नागम. नागजागानी. सपार्श्व मूर्ति

॥ ५ ॥

कीलय २ गुली नागय २ गुलाना नागय २ अयस्माजी नागय २ स्त्रीहि
नागय २ अः मयि नागय २ नर्वसर्वी नजागम नागय २ नकाहि
कैः ह्याहिकै ग्याहिकैः चायुर्थहिकैः मासिकै. मासाहु मासि
कै. साम्बत्सपिकै. नर्वसर्वी नजागम नागय २ विना नागय २ वा
मिकै. येनिकै. ह्यमिकै. सन्निपातिकै. मासाहु मासिकै. नर्व

चिन्ता

सर्वान् जागर्मानां यः विनाशयति अन्तकस्य आयुजाया ग्य कामा
धर्मिर्नि कृत्वा हा ॥ ॐ निधी सर्वजागप्रणम निहन्तकस्य भ
नशी समा का ॥ ॥ उं नमस्तु ये सर्वे तथगत हृदयः गर्ह को ल २
धर्म धातु गर्ह सं हजः समायूः सं हज २ सीता धय २ मम सर्व पापीः
सर्वे तथगत समन्ता पूष विमल विठ्ठलः रुं रुं रुं रुं रुं श्री वंसंग

11511

स्वाहा॥ ॥ॐ निशीचिंतामणी धननी समाका॥ ॥ॐ नमः श्री प्र
सन्ननामाये॥ प्रसन्ननामः अमृतमूषिः अमृतला चने सर्वाथस
धनिः परार्थसाधनिः सर्वसत्त्ववर्षक निर्वर्ण निःस्पृह निःपद
कृपुः उं आः इं क्रीं रुं द्वाहा॥ ॥ॐ निशी प्रसन्ननामानाम
धननी समाका॥ ॥ॐ नमः श्री महादेवाय॥ उं नमो दीक्षात्क

महाका

दहेनवाया॥ अस्मिन्मूलपत्रे ७५ पाठ्यं गृहीतं गृहस्थाः ॐ अमृतकृतं
लिङ्गः स्वस्वत्वादि २ ति क २ वीध २ हत २ दह २ पच २ मथ २ सर्वयुक्त
जाकुसः सगपुनपि ४५ चोपस्थानात् ॥ सर्वसत्त्वानीचयकुं कृत्
कृद्दस्वाहा ॥ ॐ निशी महाहोयवनामध्वजनी समाका ॥
ॐ नमोऽग्री महाकालाय ॥ ॐ नमोऽपकात्रिण्यदिपुष्पासमज

॥ ७ ॥

सिः कालि कचालि वगालि

चञ्जालिसिद्धिआगिनी ॥ अङ्गास्य निजसिद्धिपिनी सर्वसत्त्वानी
प्रकृष्टाय २ गृह २ सर्व ४ कृद्दानीमाचय २ कात्रय २ वीध २ कृद्द २ हत
कृद्द ॥ मम सर्वसत्त्वानीचयकु २ कृद्दस्वाहा ॥ ॐ निशी महाका
लनामध्वजनी समाका ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

उग्रना

ॐ नमः श्री गवतये आर्य उग्रना जाये ॥ नृक जगदव्ये नमः ॥ नमो ब्रह्म
र्षी सद्यः ॥ नमः सर्वेषां वक्त्रं प्रत्यक्षं ब्रह्मवाधिसत्त्वको धजा जस्य
नमो गवतये यमगुर्वमहाकारुणिकाय नमः ॥
ॐ गताय ह्रीं नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॐ उग्र २ महा उग्र
॥ उग्र गुरु उग्रना ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं

॥ ८ ॥

८ ॥ चंद्र खड्ग किं नृक ॥ ॐ नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक
माला नृक ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक
ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक
ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक
ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक जगदव्ये नमः ॥ ॐ ह्रीं नृक

सदरनदरवेदय २ सदय २ वेगालमध्यवर्तिनि. कालि ३ कालि
गणिष. प्रकालिनमूर्त्ति. प्रकालिनकृतवहनयनः काल २ कालय
२ वङ्क २ वङ्कगर्त. वङ्ककालानलप्रत. वङ्ककालागर्त. वङ्ककाला
मधुलनाहिकाषा मध्यगग. वङ्ककालावलासितषाजीनि. वङ्कद
हृ. वङ्कवृषा. वङ्कवाचाहिरूषाविद्वषयकुलि. महाकालिषा

119010

दमनि. दह २ र स्त्री कू. सर्वविद्यान्. वडवड. मानिच. छः
 अजित. अपनाजितः. अमित. अपयमित. अपविमित पू. छ
 हानसीताभापचित. असम. असमत्तक. ग्रस २ मर्द २ मथ २ प्र
 मथ २ मि. अप्रमिहत महाविद्य. मध्यवर्किनि अकल. निक्क
 ल. चतुष्कल. कलनातीत. अमृत. अमृताहव. अमृतपूषि

५५०

लि. वजा मृग. अमृग वर्षाणि. अमृग पुत्र. कृष्ण लिनि. अवधूत. अ
वधूत निवासिनि. अवधूत रा कुलि. विहना दधमनि. धम्म रजरा
रुहा रजाय रकहा रक्काहा रधम रदन दीन महानाद. मद्य निद्या
षनाद. मद्यनाद. मद्यनाद महानाद प्रिय. मद्यनादो शा विधिः
हंकाय जूयः धाना हहास. संग्रहित शुवन. त्रिशुवन ष्व वि. ध

॥ १५ ॥

क २धूक २धूक २धून २विधून २दम २ग्मा २धृ २र्ह २हं २मूर २
च २मा चय २जय २महाका जू निक. पन म ष्व वि. वि. ष्व ष्व वि
वि. ष्व वि. क्रोध ष्व वि. महा क्रोध ना ऊ ष्व वि. पी. ० ष्व वि. स
मय ष्व वि. समय. महासमा. समय. समयानुपालिनि. सम
यवर्त्तिनि. चक्रवर्त्तिनि. समय ष्व वि. समयानुपालिनि.

उग्रता

संज २ समय २ समय २ वीज नायकि वज नायकि पी ० नायकि
कामय वि कामयूप विष्ठयूप महाय धाययूप वहु विविध
विचित्रयूप क्षिति महा विकृतयूप सहस्रयूप विवक्ति निःसामा
विदर्पदलनि महा विप्रोद्यद्याद नि ॥ तर्जय सर्व मा जान्छम वय
२ सफसा गमान् घाटय २ सर्वद्रुष्ट प्रद्रुष्टान् कीलय २ सर्वग्रहा

॥ १२ ॥

नः मा हय २ सर्वरुगान् प्राणाय २ सर्वयक्र याक्र सान् रगवनि म
हाकनूना प्राधुष्ट विचक्र २ मांसपवि वाचं सर्वसत्वीष्टः उं सति
२ महासति चिंतासति सतिधवि सतिपक्ष सतिर्वेद वजस
ति वज कर्क नि वज गाकिनि वज गाकिनी द्रु दया कुल नि स
हा कृष् किंकि ति विंवि नि व्याघ्र चर्मा कृदित जय नः

उग्रता

सहा क्रीधनाजः सुदारा धिर च उद्योगलेखमस्य साहं यद्वा. ताग
कुरु हिसमितीति न जीय. रूपस्य लीकन विग्रह ॥ ह ३ सि ३
सगता ह भुक्ति जक प्रसावता सित. गुणानुक्त. सृजता म कूट
महिमा लाभ विचूदित पादपी ॥ ० विष्णु मातृवृक्षे नृपदाक
वैदिकैका जयति प्रेक्षानु कवर्णं कति मुला क्व कर्वति सर्व

॥१३॥

तथागत. गुण हृदय महा सुदा धिष्ठित महा पाथ महा माय
माया विमोहनि. माया जालनय ॥ चक्र रविचक्र रसं चक्र. गुण
गुण नमस्कृत. च विष्णु निरुग वहनयने ॥ महा कल्याणि संनि
त ॥ विष्णु रवीश्वर वल्लरु. वीर्यवानमिह. पञ्चम सुल सुदाहं
नि ॥ ऊः द्वैर्वै. हाः ॥ वरुण कृष्ण धनि निया जम सुदा दनि. प्रिय वरु

उग्रता

पद्म महा मुख ॥ महा वज्र धनुस्त्रयिणि ॥ धर्म धनुस्तु न गतं न स
वैद्या गिनी मीतल युक्तिः कायूत्तम न त निर्हय ॥ चक्षुः शुभा त्रिनि
विष्णु गर्ह ॥ विष्णु वज्र गर्ह निलय ॥ चंद्र चंद्रावगुंठि न मस्तकं
चंद्र मीतल मध्य गर्ह गर्ह ॥ अग्रहा ॥ अग्रहा दय सन्नित ॥ अग्रहा
मधुला नूट ॥ कलि नानल न मंजरी ॥ काला ग्री ॥ सर्व विद्यु विधि

॥१४॥

सनि ॥ हाः हाः अग्रहा विद्या गर्ह महा सर्व मधुल युक्ति ॥ महा
कायूत्तिक ॥ तक्रा नूवत्सल ॥ महा मन्त्रा नूसा गिधिः महा मं नू
गर्ह सर्व मं नूडा विद्या न स्वाथर्हि न न नि ॥ चंद्रुस्तु त्वापदं
कात्रिणि ॥ महा मं ग्राहक ॥ सहस्रा रेख ॥ सहस्र गुंठ ॥ न सहस्रा
कि ॥ माहय २ नाहाय २ घानय २ रूतय २ मा नय २ ग्राहय २ रू

उग्रगा

जय रविर्धनय २३ त्सादय २ सर्व इष्ट इष्टान्. ह गवन्नि धात्रा
लोक जट्ठं इष्ट इष्ट नमोस्तु न स्वाहा ॥ वीजगायुक्ति न स्वाहा ॥
या गिती गमर्वदि न स्वाहा ॥ सर्वे नथा गम समहि पू न स्वाहा ॥
सर्वे नथा गम गाधि वि न स्वाहा ॥ अप्रतिहन विद्य स्वाहा ॥ अप्र
तिहन प्रतावे स्वाहा ॥ त्रैलोक्य कर्षेति स्वाहा ॥ उं की स्वाहा ॥ उं

॥ १५ ॥

मि
कं स्वाहा ॥ उं जुं स्वाहा ॥ उं तुं स्वाहा ॥ त्रिचक्रवर्त्ति स्वाहा ॥ चतुर्व
कु मधुल स्वाहा ॥ नृपिनि स्वाहा ॥ अनृपिनि स्वाहा ॥ हृकृटी मू
रिषि स्वाहा ॥ वज्राह मूर्ति स्वाहा ॥ कृमागमथ नि स्वाहा ॥ मातृगदा
वीदिन स्वाहा ॥ मातृरुद्रका जच वि न स्वाहा ॥ षष्ठमनवा सि नि
स्वाहा ॥ महा किलि किलि प्रिय स्वाहा ॥ माहनि स्वाहा ॥ विमोह

ॐ नमो

नि स्वाहा ॥ ॐ नमो नि स्वाहा ॥ वि ॐ नमो नि स्वाहा ॥ ॐ कवीर्य स्वाहा ॥ म
हावीर्य स्वाहा ॥ ॐ नवीर्य स्वाहा ॥ हानताकिनी स्वाहा ॥ हाना म
नसमूह स्वाहा ॥ धर्मधानु गर्ह स्वाहा ॥ महावीर्य चिरु वज्र स्वाहा ॥
महासमय स्वाहा ॥ भुलोके धमनि स्वाहा ॥ महासाहसु प्रमदीनय
स्वाहा ॥ रस्वाहा ॥ नुवः स्वाहा ॥ रनुवः स्वाहा ॥ दऊवा माहि स्वाहा

॥ १६ ॥

वज्रनाभ स्वाहा ॥ सर्वमधुल विद्याधिप न स्वाहा ॥ पंच महाजका
य स्वाहा ॥ सभा ॐ नमो सक नि स्वाहा ॥ अराय प्रद स्वाहा ॥ ॐ २ मां स
र्व स्वानी ॐ नमः सर्वरूप प्रतापि ॐ नमो च शाकता कि न्य पस्मा जह ॐ
नमः सर्वग सर्वदा मम सर्व स्वानी च ॐ नमो कृष्णः पूर्णि कृष्णः
ऊँ कृष्णः रागवनिपि गला गृक ज न ॐ ३ रुद्र ३ न मा सु न स्वाहा

॥ ॐ श्रीः क्रीं हं हं हः ॥ ॐ ॥ ॐ ति श्री नुक ऊदा ना मध्व जहा पति
उग्रता समाफा ॥ ॐ ॥ यध स्मि हनु

॥ ११ ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार II-134